हुज़ूर ﷺ का साया ना था

लेखक : शान रज़ा अल-हनफ़ी

अनुवादक : आले रसूल अहमद

All India Ulama & Mashaikh Board

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صلی علی نبینا صلی علی محمد صلی علی شفیعنا صلی علی محمد

من علینا ربنا إذ بعث محمدا ایده بأیده ایدنا بأحمدا

ارسله مبشرا ارسله ممجدا صلوا علیه دآئما صلوا علیه سرمدا

صلی علی نبینا صلی علی محمدا

صلی علی نبینا صلی علی محمدا

نذرانہء عقیدت

حضور پر نور غوث الاعظم محبوب سبحانی الشیخ محی الدین ابو محمد عبدالقادر الحسنی الحسینی الجیلانی قدس اللہ سرہ الربانی نور روحہ ،اوصل الینا برکاتہ وفتوحہ رضی اللہ عنہ وارضاہ عنا تارک السلطنت غوث العالم محبوب یزدانی سید سلطان اوحدالدین قدوۃ الکبریٰ مخدوم اشرف جہانیاں جہانگیر سمنانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ

اور دیگر تمام اولیائے کاملین عارفین رحمۃ اللہ علیہم اجمعین کے مقدس و مکرم و معزز بارگاہوں میں اپنی اس کاوش کو پیش کرنے کی سعادت حاصل کررہا ہوں۔اللہ سبحانہ وتعالیٰ اپنے محبوب ﷺ کے صدقے اور وسیلے سے قبول فرماکر تمام مؤمنین والمؤمنات کی مغفرت فرمادے آمین۔

فقیر قادری گدائے اشرف سمناں

آلِ رسول احمد الاشرفی القادری کٹیہاری

المملکۃ العربیۃ السعودیۃ

Email:aalerasoolahmad@gmail.com

साया का साया ना होता है ना साया नूर का

शैखुल इस्लाम वल मुसलिमीन आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत
अल- हाफिज़ अल-कारी मौलाना अश-शाह इमाम अहमद रज़ा खान अलैहिर रहमा बरेली शरीफ

सुबह तैबा में हुवी बट ता है बाड़ा नूर का

सदका लेने नूर का, आया है तारा नूर का

मैं गदा तू बादशाह भर दे प्याला नूर का

नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदका नूर का

तेरी ही जानिब है पांचों वक़्त सजदा नूर का

रुख है किबला नूर का अबरू है काबा नार का

तू है साया नूर का हर अज्व टुकड़ा नूर का

साया का साया ना होता है ना साया नूर का

तेरी नस्ल पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है ऐने नूर, तेरा सब घराना नूर का

का फ़ गेसू हा दहन या अबरू ऑखें ऐन साद

काफ हा या ऐ न साद उनका है चेहरा नूर का

ऐ **रज़ा** यह अहमद नूरी का फैज़ नूर है

होगई मेरी ग़ज़ल बढ़ कर कसीदा नूर का

(हिदा इक़े बख्शिश भाग २ पृष्ट २४२)

जो अहले शक हैं अगर में मगर में रहते हैं

राईसुल मुहक्क़कीन शैखुल इस्लाम वल मुसलिमीन हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद मदनी अशरफ अशरफी अल-जिलानी सज्जादा नशीन हुजुर मुहद्दिसे आज़म हिन्द किछौछा शरीफ

बड़े लतीफ़ हैं नाज़ुक से घर में रहते हैं

मेरे हुज़ूर मेरी चशमे तर में रहते हैं

हमारे दिल में हमारे जिगर में रहते है

उन्हीं के घर हैं वह अपने घर में रहते हैं

मक़ाम उनका ना फर्शे जमीं ना अर्शे बरीं

वह अपने चाहने वालों के घर में रहते हैं

यकीन वाले कहाँ से चले कहाँ पहुंचे

जो अहले शक हैं अगर में मगर में रहते हैं

खुदा के नूर को अपनी तरह समझते हैं

यह कौन लोग हैं किस के असर में रहते हैं

जो **अख्तर** उनके तसव्वुर में सुबह व शाम करें

कहीं भी रहते हूँ तैबा(शरीफ़) नगर में रहते हैं

(तजल्लियाते सुखन पृष्ट २८)

नज़र आए ना साये में भी महबूब का सानी

ख़ुदा ने इसलिए रखा नहीं साया मुहम्मद का

क्या हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व असहाबिही व सल्लम का पवित्र शरीर भी नूरी था ?

हज़रत अल्लामा सय्यद अहमद शाह काज़मी अलिहिर्रहमा "रिसाला मीलादुन्नबी" के पृष्ठ नम्बर १५ पर फरमाते हैं कि हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम का शरीर भी नूर था | इस विषय पर आज कल के नये नये लोंडे, देवबंदिया वहाबी संगठन से संबंध रखने वाले, बात बात पर शिर्क एवं कुफ्र का फ़तवा दागने वाले, विरोध करते हैं और अहले सुन्नत व जमात को अभद्र शब्द का निशाना बनाते हैं इस लिए इस मुद्दे का सुबूत विद्वान अहले सुन्नत के पुस्तक से और खुद देवबंदीयूँ की पुस्तक से प्रस्तुत किया जा रहा है | इस लेख में कुछ जुमले मुजाहिदे अहले सुन्नत अबू कलीम मुहम्मद सादिक फ़ानी अलैहिर्रहमा की पुस्तक "आईना अहले सुन्नत" से लिया गया है | अल्लाह तआला लेखक को करवट करवट जन्नत पर्दान करे और विरोधीयूँ को अल्लाह तआला सत्य कुबूल करने की तौफीक़ दे आमीन |

अबू कलीम मुहम्मद सिद्दीक़ फ़ानी साहब मरहूम, अल्लामा अहमद सईद शाह काज़मी अलैहिर्रहमा की उपर वाली लेख नक़ल करने के बाद फरमाते हैं कि...

"अगर इस अक़ीदा की बिना पर कि "हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम का शरीर भी नूर था" आप (विरोधीयूँ) ने अल्लामा काज़मी अलैहिर्रहमा की व्यक्तित्व को अभद्र शब्द का निशाना बनाया है तो उन

विद्वान अहले सुन्नत और देवबंदी विचार धारा के गुरुऔं के संबंधित भी आदेश जारी करें जिन के भाषण अल्लामा अहमद सईद शाह काज़मी अलैहिर्रहमा की समर्थन एवं पुष्टि करते हैं ताकि आप की सत्यता एवं वीरता का अनुमान हो सके की आप सत्य बात कहने में किस क़दर बे बाक हैं |

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम

वह क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता

१. इमामुल हदीस हज़रत हकीम तिर्मज़ी रहमतुल्ला हि अलैह अपनी पुश्तक "नवादिरुल उसूल" में हज़रत ज़क्वान रदिअल्लाहु अन्ह से यह हदीस रवायत करते हैं:

عن ذکوان ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم لم یری لہ ظل فی شمس ولا قمر
(المواھب اللدنیۃ علی الشمائل المحمدیۃ مطبوعہ مصر ۳۰)

अनुवाद: सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व असहाबिही व सल्लम का छाया ना सूरज की धूप में नज़र आता था ना चाँद की चाँदनी में| (हवाला :अल मवाहिबुल लदुन्या अलश शमाइलिल मुहम्मदिया प्रकाशित मिस्र पृष्ट ३०)

२. हजरत अब्दुल्लाह बिन मुबारक और हाफिज़ इब्ने जौज़ी रहमतुल्ला हि अलैह हज़रत इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं :

لم یکن لرسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ظل ولم لقم مع شمس الا غلب ضوءہ ضوءھا
ولا مع السراج الا غلب ضوءہ ضوءہ
(الخصائص الکبری، ج ۱ ص ۲۸ - زرقانی علی المواھب، ج ۴ ص ۲۲۰ - جمع الوسائل للقاری، ج ۱ ص ۱۷۴)

अनुवाद: सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व असहाबिही व सल्लम के जिस्म मुबारक का छाया नहीं था ना सूरज की धुप में ना चिराग की रौशनी में, सरकार का नूर सूरज और चिराग के नूर पर ग़ालिब रहता था| (खसा ऐ से कुबरा भाग १ पृष्ठ २८)

३. इमाम रागिब अस्फहानी (मृत्यु ४५० हिज्री) रहमतुल्ला हि अलैह फरमाते हैं|

روی ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان اذا مشی لم یکن لہ ظل (المعروف الراعد)

अनुवाद: रिवायत की गयी कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व असहाबिही व सल्लम चलते तो आप का छाया ना होता था |

(अल मारूफुल राअद)

४. इमाम नस्फी (मृत्यु ७१० हिज्री) तफसीरे "मदारिक शरीफ" में हज़रत उस्मान रदिअल्लाहु अन्ह से यह हदीस नक़ल फ़रमाते हैं :

قال عثمان رضی اللہ تعالی عنہ ان اللہ ما اوضع ضلک علی الارض
لئلا یضع انسان قدمہ علی ذلک الظل
(المدارک شریف ج ۲ ص ۱۰۳ - مدارج النبوۃ ج ۲ ص ۱۶۱)

अनुवाद: हज़रत उस्मान गनी रदिअल्लाहु अन्ह ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया कि खुदा जल जलालहु ने आप का छाया जमीन पर पड़ने नहीं दिया ताकि इस पर किसी इंसान का कदम ना पड़ जाये |

(मदारिक शरीफ भाग २ पृष्ठ २८ मत्बूआ क़दीम

एवं मदारीजुन नबुवा भाग २ पृष्ट १६१)

५. इमाम जलाल उद्दीन सियूती अश शाफ़ई (मृत्यु ९११हिज्री) फरमाते हैं:

لم یقع ظلہ علی الارض ولا یری لہ ضل فی شمس ولا قمر
قال ابن سبع لانہ کان نورا قال رزین فعلبہ انوارہ
(انموزج اللبیب)

अनुवाद: हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम जाने नूर का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता था और ना सूरज चाँद के रौशनी में छाया आता था | इब्ने सुब अ इसकी वजह बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम नूर थे | रजीन ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का नूर सब पर ग़ालिब था |

(अन्मूज़जुल लबीब)

६. इमामुल ज़मान क़ाज़ी एयाज़ रहमतुल्ला हि अलैह (मृत्यु ८४४ हिज़्री) फरमाते हैं :

وماذکر من انہ لاظل لشخصہ فی شمس ولا فی قمر
لانہ کان نورا وان الذباب کان لایقع علی جسدہ ولا ثیابہ
(شفاء قاضی عیاض ج ا ص ۳۴۲ ق ۳۴۳)

अनुवाद: यह जो बता या गया है कि सूरज और चाँद की रौशनी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम पवित्र शरीर का छाया नहीं पड़ता था और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम के शरीर और लिबास (वस्त्र) पर

मख्खी नहीं बैठती थी तो इसकी वजह यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम नूर थे |

(शिफ़ा क़ाज़ी एयाज़ भाग १ पृष्ट ३४२-३४३)

७. अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्ला हिअलैह (मृत्यु ९७३ हिज्री) फरमाते हैं :

ومما يويد انه ﷺ صار نورا انه اذا مشى فى الشمس او القمر لا يظهر له ظل

لانه لا يظهر الا لكثيف وهو صلى الله عليه وسلم قد خلصه الله تعالى من سائر الكثافات الجسمانية

وصيره نورا صرفا لا يظهر له ظل اصلا (افضل القرىٰ ص ٤٦)

अनुवाद: हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम पाबन्दी के साथ यह दुआ फरमाते थे कि ईलाही मेरे तमाम इन्द्रियों एवं अंगें सारे शरीर को नूर कर दे और इस दुआ से लक्ष्य यह नहीं कि नूर होना अभी हासिल ना था कि इसका अधिग्रहण माँगते थे बल्कि यह दुआ इस बात के प्रकट करने के लिए थे कि हकीक़त में हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम का तमाम का शरीर नूर था और यह कृपा अल्लाह तआला ने हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम पर कर दिया जैसा कि हमें हुक्म हुवा कि सुरह बकरा शरीफ के अंत की प्रार्थना करें वोह भी इस गुणवत्ता के प्रकट अल्लाह त आला के कृपा के है और हुजुर अलैहिस्सलातु व सलाम के मात्र नूर हो जाने की पुष्टि इससे होती है कि धूप या चाँदनी में हुजुर का छाया पैदा न होता | इसलिए कि छाया तो क्सीफ (गढ़ा) होता है और हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व

आलिहि व सल्लम को अल्लाह त आ़ला ने तमाम शारीरिक कसाफ़तों से शुद्ध करके सरापा नूर कर दिया लिहाज़ा हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के लिए छाया असलन न था |

(अफ्ज़लुल क़ र उल कुर्रा उम्मुल कुर्रा शरह उम्मुल कुर्रा शरह नम्बर २ पृष्ठ १२८,१२९, भाग प्रथम प्रकाशित अबू ज़हबी)

८. अल्लामा शहाब उद्दीन खुफ्फाजी रहमतुल्ला हि अलैह कविता में फरमाते हैं :

ماجربظل احمد اخریال فی الارض کرامة کماقد قالوا

هذاعجب ولم بہ من عجب والناس بظلة جمعیا قالوا

وقدنطق القران بانہ النور المبین وکونہ بشر الا ینافیہ

(نسم الریاض ج۳ ص۳۱۹ مصری)

अनुवाद: सम्मान एवं श्रद्धेय के कारण हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम के छाया (साया) जिस्म के दामन जमीन पर रगड़ता हुवा नहीं चलता था हालाँकि हुज़ूर ही का साया ए करम में सरे इन्सान चैन की नींद सोते हैं इस से हैरत अंगेज़ बात और क्या हो सकती है| इस बात की गवाही के लिए कुरान करीम की यह गवाही काफी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम मुबीन हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का छाया ना होना बशर होने के मनाफ़ी नहीं है |

(नसीमुर रियाज़ भाग ३ पृष्ट ३१९ मिस्री)

९. इमाम अहमद कुस्तुलानी फरमाते हैं :

قال لم یکن له ﷺ ظل فی شمس ولا قمر رواه الترمذی عن ابن ذکوان وقال ابن سبع کان صلی اللہ علیہ وسلم

نور افکان اذا مشی فی شمس او القمر لا یظهر له ضل (مواهب اللدنیة ج ۱ ص ۱۸۰ - رزقانی ج ۴ ص ۲۲۰)

अनुवाद: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम के जिस्मे अतहर का साया ना सूरज की रौशनी में पड़ता था ना चाँद की चाँदनी में।

(मवाहिबुल लदुन्या भाग १ पृष्ट १८० - ज़ुर्कानी भाग ४ पृष्ट २२०)

१०. अल्लामा हुसैन इब्ने मुहम्मद दियार फरमाते हैं :

لم یقع ظله علی الارض ولا یری ضل فی شمس ولا قمر (کتاب الخمیس، النوع الرابع)

अनुवाद: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम के पवित्र शारीर का छाया ना सूरज की रौशनी में की रौशनी में पड़ता था ना चाँद की चाँदनी में |

(किताबुल खमीस)

११. अल्लामा सुलेमान जुमल रहमतुल्ला हि अलैह फरमाते हैं :

لم یکن له صلی الله علیه وسلم ضل یظهر فی الشمس ولا قمر (از حیات احمدیه شرح همزیه ص ۵)

अनुवाद: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का पवित्र शारीर का छाया ना सूरज की रौशनी में पड़ता था ना चाँद की चाँदनी में |

(हयाते अहमदिया शरह हम्ज़िया पृष्ट ५)

१२. इमामे रब्बानी मुजद्दिद अल्फ ए सानी रहमतुल्ला हि अलैह फरमाते हैं:

او صلی اللہ علیہ وسلم سایہ نبود در عالم شہادت سایہ ہر شخص از شخص لطیف تر است چوں لطیف تر از دے صلی اللہ علیہ وسلم در عالم نباشد اور سایہ چہ صورت دارد (مکتوبات ج ۳ ص ۱۴۷ مطبوعہ نولکشور لکھنو)

अनुवाद: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का छाया ना था और इसकी वजह यह है कि आलमे शहादत में हर चीज़ से उसका साया लतीफ़ होता है और सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम की शान यह है कि कायनात (ब्रह्मांड) में उन से ज्यादह कोई लतीफ़ चीज़ है ही नहीं फिर हुज़ूर का साया क्यों कर पड़ता |

(मकतूबात भाग ३ पृष्ट १४७ पर्काशित नवल किशोर लखनऊ)

१३. साहिबे "मजम अल बहार " अल्लामा शैख़ मुहम्मद ताहिर रहमतुल्ला हि अलैह फरमाते हैं:

من اسماء بہ ﷺ النور قیل من خصاصہ ﷺ اذا مشی فی الشمس و القمر لا یظہر لہ ظل

(زبدہ شرح شفاء مجمع بحار الانوار)

अनुवाद: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम नामो में से नूर भी एक नाम है और उसकी खुसूसियत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का साया ना धुप में और ना चाँदनी में |

(मजमअ बहारुल अनवार)

१४. साहिबे सिरतुल ह ल बिया (मारूफबिह सीरत शामी) फरमाते हैं:

اذامشی فی الشمس او القمر لایکوں لہ ظل لانہ کان نورا (المعروف الراعد)

अनुवाद: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम जब सूरज या चाँद की रौशनी में चलते तो आप का छाया ना होता इसलिए कि आप नूर थे |

(अल मारूफुल राअद)

१५. इमाम तकीउद्दीन सुबकी रहमतुल्ला हि अलैह फरमाते हैं:

لقد نزہ الرحمن ظلک ان یری علی الارض ملقی فانطوی لمزیة

अनुवाद: खुदा ए रहमान ने आप के छाया को ज़मीन पर स्थित होने से पाक फरमाया और पाए-माली से बचने के लिए आप की अज़मत (सम्मान) के कारण इसको लपेट दिया कि दिखाई न दे |

इमाम शैख़ अहमद मनावी भी यही फरमाते हैं |

१६. इमामुल आरिफीन मौलाना जलाल उद्दीन रूमी रहमतुल्ला हि अलैह फरमाते हैं:

چوں فناس از فقر پیرایہ شود

او محمد دارے بت سایہ شود

(مثنوی معنوی ودفتر پنجم)

अनुवाद: जब फ़क्र की मंजिल में दुर्वेश फ़ना का लिबास पहन लेता है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम की तरह उसका भी साया ज़ा इल (ख़त्म) हो जाता है |

(मसनवी व मानवी बाब पंजुम)

१७. हज़रत अल्लामा बहरुल उलूम लख नवी रहमतुल्ला हि अलैह इस पंकित की वजाहत फरमाते हैं:

در مصرعہ ثانی اشارہ بہ معجزہ آں سرور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم است کہ آں سرور نہ می افتاد

अनुवाद: दुसरे पंकित में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम के इस मुअ जज़ा (चमत्कार) की तरफ इशारा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का छाया नही था |

१८.	इमामुल मुहद्दीसीन हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ (मृत्यु १२३९ हिज़्री) बिन शाह वाली युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्ला हि अलैह फरमाते हैं:

از خصوصیات کہ آں حضرت ﷺ کے بدن مبارک شدادہ بودند کہ سایہ ایشاں بر زمیں نہ می افتاد

(تذکرہ الموتی و القبور ص ۱۳)

अनवाद: जो ख़ुसूसियात नबी अक्दास सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम के शारीर मुबारक में अता की गयी उन में से एक यह थी कि आपका छाया ज़मीन पर नहीं पड़ता था|

(ताज्किरतुल मौता वल क़ुबूर पृष्ट १३)

१९.	काज़ी सना उल्लाह पानी पती ((मृत्यु ११२५ हिज़्री) लेख़क माला बुद्दा मिन्ह व तफसीरे मज़हरी ने फ़रमाया है :

می گویند کہ رسول خدا را سایہ نہ بود

(تذکرۃ الموتی و القبور ص ۱۳)

अनुवाद: उलमा ए कराम फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का साया नहीं था |

२०.	मुफ़्ती इनायत अहमद काकोरवी रहमतुल्ला हि अलैह (मृत्यु १२७९ हिज़्री) फ़रमाते हैं :

अनुवाद: आप का शरीर नूर - इस वजह से आपका **छाया** ना था |

(तारीखे हबीबे इलाह पृष्ठ १६१ प्रकाशित भारत, द्वारा मुफ़्ती इनायत अहमद रहमतुल्ला हि अलैह)

२१. हज़रत शाह अहमद सईद मुहद्दिस देहलवी सुम्म अल मदनी रहमतुल्ला हि अलैह (मृत्यु १२७७ हिज्री) फरमाते हैं :

अनुवाद: "छाया आपका का ना था, शरीर आपका नूरी था"

(सईदुल बयान फ़ी मौलिद सय्येदुल इन्स व जान पृष्ठ ११३ प्रकाशित गोजर नुवाला १९८२ द्वारा : शाह अहमद सईद रहमतुल्ला हि अलैह)

२२. हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्ला हि अलैह (मृत्यु १०५२ हिज्री) फरमाते हैं :

अनुवाद: "आँ हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम सिर अक़दस से पैर मुबारक तक सरासर नूर थे"

(मदरिजुन नुबुव्वा फारसी पृष्ठ १३७ भाग प्रथम)

२३. अल्लामा जलाल उद्दीन सियूती अश-शाफ़ई (मृत्यु ९११ हिज्री) फरमाते हैं :

قال ابن سبع من خصائصه صلی اللہ علیہ وسلم ان ظله کان لا یقع علی الارض

لانه کان نورا اذا مشی فی الشمس او القمر لا ینظر له ضل قال بعضهم ویشهد له

حدیث قوله صلی اللہ علیہ وسلم ودعائه فاجعلنی نورا

(خصائص کبریٰ ج ١ ص ٦٨)

अनुवाद: इब्न सबअ ने हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम की व्यक्तित्व के संबंध में कहा कि आपका छाया धुप एवं चांदनी दोनों में इस वजह से ना था कि आप सर ता पा (सिर अक़्दस से पैर मुबारक तक) नूर थे |

(खसा ऐ से कुबरा पृष्ठ १६९ प्रकाशित कराची पाकिस्तान १९७६ द्वारा :इमाम जलाल उद्दीन सियूती रहमतुल्ला हि अलैह)

२४. मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्ला हि अलैह (मृत्यु १०१४ हिज्री) फरमाते हैं :

अनुवाद: हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम का हृदय मुबारक और शरीर नूर था और सभी नूर इसी नूर से प्रकाशित एवं लाभ आभारी हैं |

(शरह शिफ़ा बर हाशिया नसीमुर्रियाज़ पृष्ठ २१५ भाग प्रथम प्रकाशित मुल्तान द्वारा : मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्ला हि अलैह)

२५. काज़ी अयाज़ मालकी उन्दुलिसी अलैहिर रहमाँ (मृत्यु ५४४ हिज़्री) फरमाते हैं:

अनुवाद: आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के पवित्र शरीर का छाया ना धूप में होता और ना चाँदनी में क्यूंकि आप नूर थे |

(अश्शिफा अनुवादित पृष्ठ ५५२ भाग प्रथम प्रकाशित लाहौर)

२६. मौलाना अब्दुलहई लखनवी रहमतुल्ला हि अलैह फरमाते हैं :

अनुवाद: बेशक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम जब धूप और चाँदनी में चलते थे तो आपका छाया

जमीन पर नहीं पड़ता था क्यूंकि छाया कसीफ (गढ़ा) होता है और आप की व्यक्तित्व सर से क़दम तक नूर है |

(अत्तालीक अल अल अजीब पृष्ठ १३, ब हवाला अल अल अनवा रुल मुहम्मदिया पृष्ठ १६३)

२७. मुफ़्ती शफ़ी देवबंदी का फ़तवा :

प्रशन : वह हदीस कौन सी है जिस में कि रसूले मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का छाया जमीन पर स्थित नहीं होता था ?

उत्तर : इमाम सियूती ने खसा ए से कुबरा में आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का छाया ज़मीन पर स्थित ना होने के बारे में यह हदीस नक़ल फरमाई है:

"اخرج الحکیم الترمذی عن ذکوان ان رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم لم یکن یری لہ ظل فی الشمس ولا قمر الخ"

और "तावारिखे हबीबे इलाह" में इनायत अहमद काकोरवी रहमतुल्ला हि अलैह लिखते हैं कि आप का शरीर नूर इसी वजह से आपका छाया ना था | मौलाना जामी रहमतुल्ला हि अलैह ने आप के छाया ना होने का खूब नुक्ता लिखा है इस कत-आ में :

پیغمبر ماند اشت سایہ
تاشک بدل یقیں نیفتد
یعنی ہر کس کہ پیرو اوست
پیداست کہ پا زمیں نیفتد

(عزیز الفتاوی جلد ہستم ص ۲۰۲)

(अजीजुल फतवा भाग ६ पृष्ट २०२, फ़तवा दारुल उलूम देवबंद पृष्ठ १६३ भाग प्रथम प्रकाशित दारुल अशा अत कराची,)

जिन उलामे उम्मत और मुसंनिफीन (लेखक) के अक़वाल व रिवायत पेश किये हैं उनके नाम निम्मेलिखित हैं :

- हकीम तिरमिज़ी रहमतुल्ला हि अलैह
- हजरत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्ला हि अलैह
- अल्लामा हाफिज़ र ज़ी न रहमतुल्ला हि अलैह
- हाफिज़ इब्ने जौज़ी रहमतुल्ला हि अलैह
- इमाम नस्फी रहमतुल्ला हि अलैह
- इब्न सु बअ रहमतुल्ला हि अलैह
- इमाम रागिब अस्फहानी रहमतुल्ला हि अलैह
- इमाम जलाल उद्दीन सियूती रहमतुल्ला हि अलैह
- इमामुल ज़मान क़ाज़ी अल एयाज़ रहमतुल्ला हि अलैह
- अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्ला हिअलैह
- अल्लामा शहाब उद्दीन खुफ्फाजी रहमतुल्ला हि अलैह
- इमाम अहमद कुस्तुलानी रहमतुल्ला हि अलैह
- काज़ी अयाज़ मालकी उन्दुलिसी रहमतुल्ला हि अलैह
- साहिबे सीरते शामी रहमतुल्ला हि अलैह
- साहिबे सीरते ह ल बिया रहमतुल्ला हि अलैह
- इमाम ज़ुर्कानी मालकी रहमतुल्ला हि अलैह
- अल्लामा हुसैन इब्ने मुहम्मद दियार रहमतुल्ला हि अलैह
- अल्लामा सुलेमान जुमल रहमतुल्ला हि अलैह
- अल्लामा शैख़ मुहम्मद ताहिर रहमतुल्ला हि अलैह
- इमाम तकीउद्दीन सुबकी रहमतुल्ला हि अलैह

- इमामुल आरिफीन मौलाना जलाल उद्दीन रूमी रहमतुल्ला हि अलैह
- मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्ला हि अलैह
- हज़रत अल्लामा बहरुल उलूम लख नवी रहमतुल्ला हि अलैह
- इमामुल मुहद्दीसीन हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़
- मुफ़्ती इनायत अहमद काकोरवी रहमतुल्ला हि अलैह
- हज़रत शाह अहमद सईद मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्ला हि अलैह
- हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्ला हि अलैह
- अल्लामा जलाल उद्दीन सियूती अश-शाफ़ई रहमतुल्ला हि अलैह
- इमामे रब्बानी मुजद्दिद अल्फ ए सानी रहमतुल्ला हि अलैह
- मौलाना अब्दुलहई लखनवी रहमतुल्ला हि अलैह

इनके इलावा मुखालिफीन (विरोधीयूं) के कुछ मौलवी हैं जिनके नाम और कौल हवाले के साथ बताया जा रहा है आप दिल और दिमाग को हाज़िर करके पढ़े और खुद फैसला करें |

तुम को अपने हुस्न का इहसास नहीं
आइना सामने रख दूं तो पसीना आ जाये

२८. मौलवी अशरफ़अली देवबंदी लिखता है:

हमारे हुजुर (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) सर ता पा नूर थे हुजुर (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) मैं जुल्मत (अंधेर) नाम को भी ना थी इसलिए आप का छाया ना था |

(शुक्रून नि अ म त बि ज़िक्रे रह्मतुर्रह्मा पृष्ठ ३१ प्रकाशित कराची)

२९. कारी मुहम्मद तय्येब देवबंदी लिखता है:

कि आप (नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) के पवित्र शरीर जमाल मुबारक और हकीक़त पाक सब ही में नूरानियत और आकर्षित नज़र आती है |

(आफ़ताबे नुबूवत पृष्ठ ४९ प्रकाशित लाहौर १९८० ई.)

३०. मौलवी आबिद मियां देवबंदी :

अपनी लेखन रहमतुल लिल आ ल मीन (डाभेल) में लिखता है :

आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस हाबिही व सल्लम का पवित्र शरीर नूरानी था जिस समय आप धूप और चाँदनी रात मैं आमद व रफत (चलते-फिरते) फरमाते थे तो बिलकुल छाया प्रकट न होता |

(रहमतुल लिल आ ल मीन पृष्ठ ५३ प्रकाशित कराची)

इस पुस्तक पर निम्नलिखित देवबंदी विचार धारा के विद्वान की प्रस्तावना एवं समर्थन दर्ज हैं |

१. मुफ़्ती किफायतुल्ला देहलवी
२. मौलवी अनवर शाह कश्मीरी
३. मौलवी असगर हुसैन
४. मौलवी शब्बीर अहमद उस्मानी
५. मौलवी हबीबुर्रहमान
६. मौलवी एअ ज़ाज़ अली
७. मौलवी अब्दुश्शाकूर लखनवी
८. मौलवी अहमद सईद (देवबंदी)

क्या इसके बाद भी इस इलज़ाम की गुंजाईश रह जाती है कि पवित्र शरीर का छाया ना होने के तसव्वुर आवामी सोच का

अभिनव (नवाविचार) है | जिस्म मुबारक के छाया ना होने के सम्बन्ध आम मुसलमानों का यह अक़ीदा (विश्वास) बे बुनियाद नहीं है | इस अकीदा के सही होने के लिए मात्र दलाइल ही नहीं है मजीद काबिले इतेमाद हस्तियुं के कौल व दलाइल भी हैं | निम्म लिखित उलमा हमारे मुक़तदा हैं जिनकी चमकती हुवी इबारत मोतबर (विश्वसनीय) पुश्तकों से हम नक़ल कर चुके हैं |

खुदा ए कदीर दौरे जदीद के फ़ितनों से सदा लोह मुसलमानों को महफूज़ रखे और इमान पे मौत नसीब करे | आमीन

लेखक

मुहम्मद शान रज़ा अल- हनफ़ी

हिंदी अनुवादक व जदीद इज़ाफ़ा

आले रसूल रसूल अहमद अल- अशरफी अल- क़ादरी

Email: aalerasoolahmad@gmail.com

पैगामे आला हज़रत अलैहिर्रहमा

अल्लाह व रसूल के सच्ची मुहब्बत उनकी ताजीम और उनके दोस्तों की खिदमत और उनकी तकरीम और उनके दुश्मनों से सच्ची अदावत जिस से खुदा और रसूल की शान में अदना तौहीन पाओ फिर वह तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यूँ न हो फ़ौरन उस से जुदा हो जाओ जिस को बारगाहे रिसालत में जरा भी गुस्ताख देखो फिर वह तुम्हारा कैसा ही मुअज्जम क्यूँ न हो, अपने अन्दर से उसे दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फ़ेंक दो | **(वसाया शरीफ़ पृष्ट ३ द्वारा मौलाना हसनैन रज़ा बरेली शरीफ़)**

Introduction to AIUMB

All India Ulama & Mashaikh Board (AIUMB) has been established with the basic purpose of popularizing the message of peace of Islam and ensuring peace for the country and community and the humanity. AIUMB is striving to propagate Sunni Sufi culture globally .Mosques, Dargahs, Aastanas, and Khanqwahs are such fountain heads of spirituality where worship of God is supplemented with worldly duties of propagating peace, amity, brotherhood and tolerance.

AIUMB is a product of a necessity felt in the spiritual, ethical and social thought process of Khaqwahs.Khanqwahs also have made up their mind to update the process and change with the changing times. As it is a fact that Khanqwahs cannot ignore some of the pressing problems of the community so the necessity to change the work culture of these centers of preaching and learning and healing was felt strongly. AIUMB condemns all those deeds and words that destabilize the country as it is well known that this religion of peace never preaches hatred .Islam is for peace. Security for all is the real call. AIUMB condemns violence in all its form and manifestation and always ready to heal the wounds of all the mauled and oppressed human beings. The integral part of the manifesto of AIUMB is peace and development. And that is why Board gives first priority to establish centers of quality modern education in Sunni Sufi dominated ares of the country. The other significant objectives of the Board are protection of waqf properties, development of Mosques, Aastanas, Dargahs and Khanqwahs.
This Board is also active in securing workable reservation for Muslims in education and employment in proportion to their population. For this we have been organizing meetings in U.P, Rajasthan, Gujrat, Delhi, Bihar, West Bengal, Jharkhand, Chattisgadh, Jammu& Kashmir, and other states besides huge Sunni Sufi conferences and Muslim Maha Panchayets . Sunni conference (Muradabad 3rd Jan 2011)Bhagalpur(10th May 2010) and Muslim Maha Panchayet at Pakbara Muradabad (16th October 2011) and also Mashaikh e tareeqat conference of Bareilly (26th November 2011) are some of the examples.

HISTORICAL FACT AND THE NEED OF THE HOUR

The history of India bears witness to that fact that when Alama Fazle Haq Khairabadi gave the clarion call to fight for the freedom of our country all the Khanqahs and almost all the Ulama and Mashaikh of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat rose in unison and gave proof of their national unity and fought for Independence which resulted in liberation of our country from British rule.
But after gaining freedom, our Khanqahs and The Ulama of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat went back to the work of dawa and spreading Islam, thinking that the efforts that were undertaken to gain freedom are distant from religion and leaving it to others to do the job. Thus the Independence for which our Ulama and Mashaikh paid supreme sacrifice and laid down their lives resulted in us being enslaved and thereby depriving us legimative right to participate in the governance of our country.

After the Independence hundreds of issues were faced by the Umma, whether religious or economic were not dealt with in a proper way and we kept lagging behind. During the lat 50 years or so a handful of people of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat could become MLA's, MP's and minister due to their individual efforts lacking all along solid organized community backing as a result of which Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat remained disassociated with the Government machinery and we find that we have not been able to found foothold in the Waqf Board, Central Waqf Board, Hajj Committee, Board for Development of Arbi, Persian & Urdu or Minorities Commission. Similarly when we look towards political parties big or small we see a specific non-Sunni lobby having strong presence. In all the Institution mentioned above and in all political parties Sunni presence is conspicuous by its absence.

Time and again Ulama and Mashaikh have declared that the Sunni's constitutes a total of approximately 75% of all Muslim population. This assertion have lived with us as a mere slogan and we have not been able to assert ourselves nor have we made any concerted efforts to do so. It is the need of the hour that The Ulama and Mashaikh should unite and come on single platform under the banner of Ahl-E- Sunnah Wal-Jamaat to put forward their message to the Sunni Qaum. To propagate our message Sunni conferences should be held in the District Head Quarters and State Capitals at least once a year to show our strength and numbers this is an uphill task and would require huge efforts but rest assured that once we do that we shall be able to demonstrate our number leaving the non-Sunni way behind thereby changing the perception of political parties towards us and ensuring proper representation in every field.

AIMS AND OBJECTIVES OF AIUMB

To safeguard the right of Muslim in general and Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in particular.

To fight for proper representation of responsible person of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in national and regional politics by creating a peaceful mass movement.

To ensure representation of Sunni Muslim in Government Organization specially in Central Sunni Waqf Boards and Minorities Commission.

To fight against the stranglehold and authoritarianism of non-Sunni's in State Waqf Board.
To ensure representation of Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat in the running of the state waqf board.

To end the unauthorized occupation of the Waqf properties belonging to Dargahs, Masajids, Khanqahs and Madarasas, by ending the hold of non-Sunni's and to safeguard Waqf properties and to manage them according to the spirit of Waqf.

To create an envoirment of trust and understanding among Sunni Mashaikh, Khanqahs and Sunni Educational institution by realizing the grave danger being paced by Ahl-E-Sunnah Wal-Jamaat.

To rise above pettiness, narrow mindedness and short sightedness to support common Sunni mission.

To work towards helping financially weak educational institutions.

To provide help to people suffering from natural calamities and to work for providing help from Government and other welfare institutions.

To help orphans, widows, disabled and uncared patients.

To help victims of communalism and violence by providing them medical, financial and judicial help.

To organize processions on the occasion of Eid-Miladun-Nabi (SAW) in every city under the leadership of Sunni Mashaikh. To restore the leadership of Sunni Mashaikh in Juloos-E-Mohammadi (SAW) wherever they were organized by Wahabi and Deobandis.

To serve Ilm-O-Fiqah and to solve the problem in matters relating to Shariah by forming Mufti Board to create awareness among the Muslims to understand Shariah

To establish Interaction with electronic and print media at district and state level to express our viewpoint on sensitive issues.

Ashrafe–Millat Hazrat Allama Maulana Syed Mohammad Ashraf Kichhowchhwi

President & Founder All India Ulama & Mashaikh Board

Email : ashrafemillat@yahoo.com

Twitter : www.twitter.com/ashrafemillat

Facebook : www.facebook.com/AIUMBofficialpage Website: www.aiumb.com

Head Office :

20, Johri Farm,
2nd Floor, Lane No. 1
Jamia Nagar, Okhla
New Delhi -25
Cell : 092123-57769
Fax : 011-26928700

Zonal Office
106/73-C,
Nazar Bagh, Cantt. Road,
Lucknow.
Email :aiumbdel@gmail.com

ان شاء اللہ عزوجل
انگریزی زبان میں بہت ہی جلد آپ کی خدمت میں پیش کیا جائیگا۔
غوث العالم محبوب یزدانی
سید مخدوم اشرف جہانگیر سمنانی رضی اللہ عنہ